

पूर्ण सुसमाचार और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा: अध्ययन समूह एवं परिवार अगुआ निर्देशिका

1. परिचय: राज्य का पूर्ण सुसमाचार और इसकी नींव

1.1. सुसमाचार का रणनीतिक महत्व

परिवारों और गृह-अध्ययन समूहों के सफल संचालन हेतु "राज्य के पूर्ण सुसमाचार" के मसीह-वैज्ञानिक अर्थ को स्पष्टता से समझना रणनीतिक रूप से अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक कलीसियाई वातावरण में प्रायः यह भ्रांति पाई जाती है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल एक ऐच्छिक, द्वितीयक या विशेष वरदान प्राप्त विश्वासियों तक सीमित अनुभव है। परंतु पवित्र शास्त्र के समग्र प्रकाश में, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा सुसमाचार के संदेश का एक अनिवार्य, अभिन्न और मूलभूत घटक है। यह मसीही जीवन में ऊपर से जोड़ा गया कोई ऐच्छिक अनुभव नहीं है, अपितु यह उस पूर्ण उद्धार संदेश की मूल नींव है जिसे प्रभु यीशु मसीह ने अपनी देह अर्थात् कलीसिया को सौंपा है।

1.2. पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की प्रारंभिक घोषणा

प्रभु यीशु मसीह द्वारा अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरंभ करने से पूर्व ही, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु के आगमन और उनके मुख्य कार्य की पहचान इसी आत्मिक अनुभव के रूप में कराई थी। मरकुस 1:8 में लिखा है:

"मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।" — मरकुस 1:8

पाठ्य तथ्यों के आधार पर मुख्य बिंदु:

- **संदेश की केंद्रीयता:** यूहन्ना ने अपने जल के बपतिस्मा की सीमा को रेखांकित करते हुए यीशु द्वारा दिए जाने वाले पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को उच्चतर और केंद्रीय अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया।
- **यीशु की सेवकाई की पहचान:** मसीह यीशु की सेवकाई का एक प्राथमिक और विशिष्ट उद्देश्य विश्वासियों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से सुसज्जित करना है।
- **प्रारंभिक उद्घोषणा:** सुसमाचार का आरंभ होते ही यह स्पष्ट कर दिया गया था कि मसीह में पूर्ण सहभागिता का अर्थ केवल जल का बपतिस्मा नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना है।

1.3. मूलभूत सिद्धांतों का मूल्यांकन

इब्रानियों 6:1–2 में मसीही जीवन के अत्यंत आवश्यक और बुनियादी सिद्धान्तों को सूचीबद्ध किया गया है:

"इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुएों के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षा रूपी नींव फिर से न डालें।" — इब्रानियों 6:1–2

यहाँ पवित्र शास्त्र "बपतिस्मों" (बहुवचन) और "हाथ रखने" (laying on of hands) को मसीह की शिक्षा की "आरम्भ की बातों" अर्थात् मसीही जीवन की बुनियादी नींव के रूप में वर्गीकृत करता है:

- **बहुवचन 'बपतिस्मों' (Baptisms) का अर्थ:** यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि मसीही अनुग्रह के विधान में एक से अधिक बपतिस्मा शामिल हैं—प्रारंभिक जल का बपतिस्मा और उसके उपरांत पवित्र आत्मा का बपतिस्मा।
- **हाथ रखना (Laying on of Hands):** यह वह बाइबलीय और आत्मिक माध्यम है जिसके द्वारा विश्वासी पवित्र आत्मा का दान और सामर्थ्य प्राप्त करते हैं।
- **सैद्धांतिक मूल्यांकन:** जो कलीसियाएँ या अध्ययन समूह पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के अनुभव को नकारते हैं या अनदेखा करते हैं, वे वास्तव में मसीही धर्म-शास्त्र की प्रारंभिक नींव को ही अधूरा छोड़ देते हैं। इसके परिणामस्वरूप उनकी सेवकाई आत्मिक रूप से शक्तिहीन (powerless) हो जाती है, क्योंकि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के माध्यम से ही परमेश्वर अपने चेलों को कार्य करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं।

मसीह की शिक्षा की इन प्रारंभिक और बुनियादी नींवों को समझने के पश्चात, गृह-समूह अगुआओं के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे गहराई से विश्लेषण करें कि पवित्र आत्मा का यह बपतिस्मा प्रारंभिक उद्धार अथवा धर्म-परिवर्तन (conversion) से किस प्रकार भिन्न और पृथक अनुभव है।

2. मुक्ति और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा में अन्तर

2.1. दो भिन्न अनुभवों की आवश्यकता

अध्ययन समूह के अगुआओं को यह स्पष्टता होना अनिवार्य है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा धर्म-परिवर्तन (उद्धार) के बाद का एक विशिष्ट और पृथक अनुभव है। कलीसियाओं में यह भ्रांति व्यापक है कि जब कोई व्यक्ति यीशु पर विश्वास लाता है या जल का बपतिस्मा लेता है, तो उसे पवित्र आत्मा का पूर्ण संचार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है और किसी अन्य अनुभव की आवश्यकता नहीं रहती। परंतु पवित्र शास्त्र यह सिद्ध करता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रारंभिक "उद्धार पैकेज" का स्वचालित हिस्सा नहीं है, अपितु यह रूपांतरण के उपरांत प्राप्त होने वाला एक आवश्यक अलौकिक वरदान है।

2.2. मामला अध्ययन 1: सामरिया के विश्वासी

प्रेरितों के काम अध्याय 8 में सामरिया के लोगों के धर्मांतरण और जल के बपतिस्मा का स्पष्ट विवरण मिलता है:

"परन्तु जब उन्होंने तितलुप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे।" — प्रेरितों के काम 8:12

जब यरूशलेम के प्रेरितों ने सुना कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर का वचन ग्रहण कर लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा:

"उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।" — प्रेरितों के काम 8:14–17

पाठ्य विश्लेषण: सामरिया के विश्वासी फिलिपस के सुसमाचार पर विश्वास ला चुके थे और प्रभु यीशु के नाम में जल का बपतिस्मा भी ले चुके थे। फिर भी, पवित्र आत्मा उनमें से किसी पर नहीं उतरा था। उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कराने के लिए प्रेरितों का यरूशलेम से आकर उन पर हाथ रखना और प्रार्थना करना आवश्यक हुआ। यह इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि मुक्ति/जल का बपतिस्मा पाना और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना कालानुक्रमिक एवं आत्मिक रूप से दो अलग-अलग घटनाएँ हैं।

2.3. मामला अध्ययन 2: इफिसुस के चेले

प्रेरितों के काम 19:1–7 में प्रेरित पौलुस की इफिसुस में लगभग बारह पुरुषों से भेंट का विवरण दर्ज है। इस घटनाक्रम का क्रमिक एवं सैद्धांतिक विश्लेषण निम्नलिखित है:

1. **प्रारंभिक विश्वास और आत्मा के अनुभव की जाँच:** पौलुस ने आते ही उनसे मुख्य प्रश्न पूछा, *"क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?"* यह प्रश्न ही सिद्ध करता है कि विश्वास करने के बाद भी आत्मा को न पाने की संभावना बनी रहती है।
2. **अधूरे ज्ञान व शिक्षा का प्रकटीकरण:** चेलों ने उत्तर दिया, *"हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।"* जब पौलुस ने उनके बपतिस्मा के विषय में पूछा, तो उन्होंने बताया कि उन्होंने केवल यूहन्ना का मन फिराव का बपतिस्मा लिया था।
3. **मसीह में स्पष्टता और पुनः जल का बपतिस्मा:** पौलुस ने उन्हें समझाया कि यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव का था, जो यीशु पर विश्वास करने का निर्देश देता था। यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया।
4. **हाथ रखा जाना (Laying on of Hands):** जल के बपतिस्मा के पश्चात्, जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा।
5. **तत्कालिक अलौकिक प्रकटीकरण:** पवित्र आत्मा के उतरते ही वे तुरंत भिन्न-भिन्न भाषाओं में बोलने और भविष्यवाणी करने लगे।

यह घटना स्पष्ट करती है कि मसीह पर विश्वास लाने के बाद भी विश्वासी पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से अनजान रह सकते हैं, और हाथ रखे जाने के माध्यम से वे इस अलौकिक अनुभव को भाषाओं में बोलने और भविष्यवाणी के प्रत्यक्ष चिह्नों के साथ प्राप्त करते हैं।

2.4. तुलनात्मक विश्लेषण तालिका

तुलना का पहलू	केवल जल का बपतिस्मा / धर्म-परिवर्तन	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
मूल परिभाषा एवं स्थिति	परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम पर विश्वास करना एवं जल में बपतिस्मा लेना (प्रेरितों के काम 8:12, 19:5)।	उद्धार/परिवर्तन के बाद विश्वासी पर पवित्र आत्मा का अलौकिक रीति से उतरना (प्रेरितों के काम 8:15-17, 19:6)।
सामरिया का उदाहरण (प्रेरितों के काम 8)	लोगों ने सुसमाचार माना और जल का बपतिस्मा लिया, परंतु पवित्र आत्मा किसी पर नहीं उतरा था।	यरूशलेम से आए पतरस और यूहन्ना के हाथ रखने और प्रार्थना करने पर पवित्र आत्मा पाया।
इफिसुस का उदाहरण (प्रेरितों के काम 19)	केवल यूहन्ना का मन फिराव का बपतिस्मा लिया था; पवित्र आत्मा की उपस्थिति से भी अनजान थे।	प्रभु यीशु के नाम में जल के बपतिस्मा के उपरांत पौलुस द्वारा हाथ रखने पर पवित्र आत्मा प्राप्त किया।
प्रत्यक्ष अलौकिक प्रकटीकरण	मसीह यीशु के प्रति विश्वास और जल का साक्षीकरण।	आत्मा द्वारा दी गई सामर्थ्य से भिन्न-भिन्न भाषाओं में बोलना और भविष्यवाणी करना (प्रेरितों के काम 19:6)।

मुक्ति और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के मध्य इस स्पष्ट सैद्धांतिक अंतर को स्थापित करने के पश्चात, अब अध्ययन समूह के अगुआओं को उस अलौकिक सामर्थ्य और व्यावहारिक उद्देश्य को समझना होगा जिसके लिए प्रभु यीशु अपने चेलों को इस अनुभव से सुसज्जित करते हैं।

3. अलौकिक सामर्थ्य और मसीही गवाही का प्रभाव

3.1. मसीही जीवन में आत्मिक सामर्थ्य की आवश्यकता

एक मसीही विश्वासी के दैनिक आत्मिक जीवन, मसीही आचरण और समाज में उसकी प्रभावशाली गवाही के लिए आत्मिक सामर्थ्य (Power) कोई विलासिता या ऐच्छिक अनुभव नहीं है, अपितु यह एक नितांत आवश्यकता है। अलौकिक सामर्थ्य के बिना मसीही जीवन केवल मानवीय प्रयासों और नैतिक नियमों के पालन तक सीमित रह जाता है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा विश्वासी को इस योग्य बनाता है कि वह मसीह के जीवन्त प्रतिनिधि के रूप में अलौकिक रूप से कार्य कर सके।

3.2. सामर्थ्य पाने की प्रतीक्षा का आदेश

प्रभु यीशु मसीह ने अपनी पृथ्वी की सेवकाई पूर्ण करने के बाद और स्वर्गारोहण से ठीक पूर्व अपने शिष्यों को स्पष्ट निर्देश दिया था कि वे सामर्थ्य पाए बिना अपनी सेवकाई और गवाही का कार्य कदापि आरंभ न करें:

"और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" — लूका 24:49

"क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" — प्रेरितों के काम 1:5

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" — प्रेरितों के काम 1:8

संरचित विश्लेषण: यीशु ने अपने शिष्यों को यरूशलेम नगर में रुकने और प्रतीक्षा करने की आज्ञा इसलिए दी क्योंकि वे अपनी प्राकृतिक क्षमताओं, बुद्धि, मानवीय तर्क या शिक्षण के बल पर परमेश्वर के राज्य का विस्तार नहीं कर सकते थे। उन्हें उस अलौकिक शक्ति (Dunamis) की आवश्यकता थी जो उन्हें केवल पेंतेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के बपतिस्मा द्वारा प्राप्त होनी थी। यह दर्शाती है कि आत्मिक सेवकाई की सफलता मानवीय योग्यता पर नहीं, बल्कि स्वर्गीय सामर्थ्य पर निर्भर है।

3.3. प्रभाव विश्लेषण: सामर्थ्यहीन बनाम सामर्थ्ययुक्त गवाही

• पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बिना सेवकाई:

- जो लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किए बिना सुसमाचार का प्रचार करने का प्रयास करते हैं, वे केवल *"मनुष्य को मनाने वाले शब्द"* बोलने तक सीमित रह जाते हैं।
- ऐसी सेवकाई स्वाभाविक रूप से शक्तिहीन (powerless) होती है, क्योंकि उसमें परमेश्वर की जीवित शक्ति का प्रकटीकरण और जीवन-परिवर्तनकारी सामर्थ्य अनुपस्थित रहती है।

• पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से युक्त सेवकाई:

- जो विश्वासी पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के माध्यम से स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण होते हैं, वे केवल साधारण प्रचारक नहीं बल्कि *"जीवित गवाह"* (living witnesses) बन जाते हैं।
- उनका व्यक्तिगत जीवन, प्रार्थना और सेवकाई स्वयं प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान और सत्य की समर्थ गवाही बन जाती है। परमेश्वर स्वयं अपनी अलौकिक शक्ति के द्वारा उनके वचन और जीवन को प्रमाणित करते हैं।

आत्मिक सामर्थ्य और मसीही गवाही के इस मूलभूत महत्व को ध्यान में रखते हुए, अगुआओं को अब यह समझना होगा कि वे अपने अध्ययन समूहों और परिवारों में सदस्यों को इस बपतिस्मा को प्राप्त करने हेतु किस प्रकार व्यावहारिक मार्गदर्शन और प्रार्थना में अगुवाई प्रदान कर सकते हैं।

4. अगुआओं के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन और प्रार्थना

4.1. अगुआ का दायित्व और संवेदनशीलता

परिवार और अध्ययन समूह के अगुआ के रूप में आपकी भूमिका केवल सैद्धांतिक जानकारी देने तक सीमित नहीं है। आपकी मुख्य जिम्मेदारी अपने समूह के सदस्यों को एक वास्तविक आत्मिक अनुभव की ओर ले जाना, स्वस्थ बाइबलीय चर्चा का संचालन करना और विश्वासी प्रार्थना के माध्यम से उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने में सहायता करना है।

अगुआ ध्यान दें: समूह की संवेदनशीलता एवं व्यावहारिक प्रबंधन (Leader's Note on Group Dynamics)

- **भय और संकोच को दूर करें:** अनेक विश्वासी भाषाओं में बोलने या अलौकिक प्रकटीकरणों को लेकर संकोचित या भयभीत हो सकते हैं। उन्हें प्रेम से सिखाएं कि पवित्र आत्मा भय का नहीं बल्कि प्रेम, सामर्थ्य और संयम का आत्मा है।
- **दबावमुक्त वातावरण बनाएँ:** किसी भी विश्वासी पर भाषाओं में बोलने का कृत्रिम या मानसिक दबाव न डालें। पवित्र आत्मा का अनुभव जबरदस्ती उत्पन्न नहीं किया जाता, बल्कि यह विश्वास और समर्पण से ग्रहण किया जाता है।
- **प्रार्थना का माहौल:** समूह में शांति, विश्वास और पवित्रता का वातावरण निर्मित करें। जब आप उन पर हाथ रखकर प्रार्थना करते हैं, तो उन्हें मसीह यीशु पर ध्यान केंद्रित करने और आत्मा की उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने का प्रोत्साहन दें।

4.2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के व्यावहारिक कदम

यदि आपके समूह या परिवार के किसी विश्वासी ने प्रभु यीशु पर विश्वास करने के उपरांत भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया है, तो उन्हें पाठ्य के अनुसार निम्नलिखित व्यावहारिक चरणबद्ध मार्गदर्शन दें:

1. **विश्वास योग्य कलीसिया की खोज करें:** एक ऐसी स्थानीय कलीसिया (चर्च) की तलाश करें और उससे जुड़ें जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की बाइबिल संबंधी सच्चाई में स्पष्ट रूप से विश्वास रखती हो और उसका अभ्यास करती हो।

2. **अगुआओं से प्रार्थना का अनुरोध करें:** उस कलीसिया के आत्मिक अगुआओं एवं प्राचीनों के पास जाएँ और उनसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करें कि वे उन पर हाथ रखें (lay hands) और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए विश्वासी प्रार्थना करें।
3. **अलौकिक सामर्थ्य को स्वीकार करें:** प्रार्थना के माध्यम से प्राप्त होने वाली स्वर्गीय शक्ति को ग्रहण करें ताकि आप एक सच्चे मसीही शिष्य का जीवन जी सकें और समाज में यीशु मसीह के सुसमाचार के जीवित गवाह बन सकें।

4.3. अध्ययन समूह हेतु चर्चा के प्रश्न एवं अगुआ निर्देश

प्रश्न 1: इब्रानियों 6:1–2 के आधार पर, "बपतिस्मों" (बहुवचन) और "हाथ रखने" के सिद्धांत को मसीही विश्वास की "आरम्भ की बातें" (बुनियादी नींव) क्यों कहा गया है?

- **अगुआ के लिए मार्गदर्शक बिंदु:** सदस्यों को समझाएं कि मसीही जीवन की नींव केवल मन फिराव और विश्वास तक सीमित नहीं है। इब्रानियों के अनुसार, एक से अधिक 'बपतिस्मा' (जल का और आत्मा का) और 'हाथ रखना' (आत्मा के दान प्राप्त करने का माध्यम) मसीही शिक्षा की प्रारंभिक नींव हैं। यदि कोई कलीसिया इसे छोड़ती है, तो उसकी नींव अधूरी रह जाती है।

प्रश्न 2: प्रेरितों के काम 8 (सामरिया) और प्रेरितों के काम 19 (इफिसुस) की घटनाओं से यह कैसे सिद्ध होता है कि उद्धार/जल का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दो अलग-अलग अनुभव हैं?

- **अगुआ के लिए मार्गदर्शक बिंदु:** सामरिया के लोगों ने सुसमाचार पर विश्वास किया और जल का बपतिस्मा लिया, परंतु जब तक प्रेरितों ने हाथ नहीं रखे, पवित्र आत्मा उन पर नहीं उतरा था। इफिसुस के चेले भी विश्वासी थे, पर आत्मा के बपतिस्मा से अनजान थे। ये दोनों मामले स्पष्ट करते हैं कि धर्म-परिवर्तन के समय आत्मा का पूर्ण बपतिस्मा स्वतः नहीं मिलता; यह एक अलग और बाद का अनुभव है।

प्रश्न 3: लूका 24:49 और प्रेरितों के काम 1:8 में यीशु ने अपने शिष्यों को यरूशलेम में सामर्थ्य पाने तक प्रतीक्षा करने की आज्ञा क्यों दी? "मनुष्य को मनाने वाले शब्दों" पर निर्भर सेवकाई की क्या सीमाएँ हैं?

- **अगुआ के लिए मार्गदर्शक बिंदु:** समूह का ध्यान इस ओर आकर्षित करें कि यीशु के साथ तीन साल रहने के बावजूद चेले बिना आत्मिक सामर्थ्य के गवाही देने के योग्य नहीं थे। केवल मानवीय ज्ञान या "मनुष्य को मनाने वाले शब्द" शक्तिहीन होते हैं और हृदय परिवर्तन नहीं कर सकते। स्वर्गीय सामर्थ्य (Dunamis) ही विश्वासी को निडर और समर्थ गवाह बनाती है।

प्रश्न 4: एक विश्वासी के व्यक्तिगत जीवन और गवाही में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद क्या प्रत्यक्ष और व्यावहारिक परिवर्तन आते हैं?

- **अगुआ के लिए मार्गदर्शक बिंदु:** उत्तर में प्रेरितों के काम 19:6 के प्रकाश में भाषाओं में बोलने, भविष्यवाणी करने, प्रार्थना जीवन के शक्तिशाली होने, मसीही गवाही में निडरता आने और जीवन के "जीवित गवाह" में बदलने जैसे व्यावहारिक एवं अलौकिक परिवर्तनों पर जोर दें।

4.4. समापन सारांश

अध्ययन समूह एवं परिवार अगुआओं को चाहिए कि वे अपने सदस्यों के लिए पूरे विश्वास, निडरता और आत्मिक अधिकार के साथ हाथ रखकर प्रार्थना करें कि वे पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ्य से परिपूर्ण हों, ताकि उनका जीवन और सेवकाई प्रभु यीशु मसीह के सत्य की समर्थ और जीवित गवाही बन सके।